

संतोषी माता को आरती: जय संतोषी माता

पद 1

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता।
अपने सेवक जन को, सुख सम्पति दाता॥

पद 2

सुंदर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हो।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हो॥

पद 3

गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मंद हँसत करुणामयी, त्रिभुवन जन मोहे॥

पद 4

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर दुरें प्यारे।
धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे॥

पद 5

गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामें संतोष कियो।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो॥

पद 6

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मंडली छाई, कथा सुनत मोही॥

पद 7

मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई॥

पद 8

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसे हमारे, इच्छा फल दीजै॥

पद 9

दुखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किए।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए॥

पद 10

ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो॥

पद 11

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे॥

पद 12

संतोषी माता की आरती, जो कोई जन गावे।
ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पति, जी भरकर पावे॥